विवाह की आदिकथा

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

महाप्रजापति ब्रह्मा अयोनिज सत्ता सृजन करते-करते जब अधिक सृष्टि कर नहीं सके तब सृष्टि का सम्वर्द्धन करने के लिये उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण स्वरूप मदनरूपी कामदेव का आह्वान किया। तत्पश्चात् मदनदेव की सहायता से उन्होंने मैथुनज सृष्टि-प्रकरण प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम ब्रह्मा ने निज अंग से मनु एवं शतरूपा का सृजन किया। इसके बाद पुरूष व प्रकृति के संयोग द्वारा मैथुनज सृष्टि को विशुद्ध एवं वैध करने के लिये, पवित्र अग्नि को साक्षी मानकर, वैदिक मंत्रादि के सहयोग से पुरूष व प्रकृति की विशुद्धतापूर्ण मानस निबन्धन को पति-पत्नी अथवा स्वामी-स्त्री के रूप में परिणत करने के उद्देश्य से, विवाह या परिणय का नियम सृष्टि में प्रचलित किया। इस विधि की विशुद्धता एवं नित्यता जिससे कायम रहे एवं मैथुन सृष्टि के फलस्वरुप जैसे ब्रह्माण्ड में पवित्रता अटूट रहे, इस उद्देश्य से सर्वप्रथम ब्रह्मा ने गोलोकधाम में भगवान श्रीकृष्ण के समीप गमन किया। भगवान श्रीहरि के मानसपुत्र महाप्रजापति ब्रह्मा इस ब्रह्माण्ड में वेद सृजनकारी प्रथम "ब्राह्मण" हैं।

एकबार गोलोक में श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा निर्जनवास कर रहे थे, ऐसे समय महाप्रजापति ब्रह्मा वहाँ उपस्थित हुए और भगवान श्रीकृष्ण व श्रीराधा के चरणों में प्रणत होकर उन दोनों को स्तव-स्तुति द्वारा सन्तुष्ट किया। ब्रह्मा के स्तव-स्तुति से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने उनको वर माँगने को कहा। तब ब्रह्मा ने उन दोनों के श्रीपादपद्म में "अचला भक्ति" हेतु प्रार्थना की। तत्पश्चात् ब्रह्मा पुनः उन दोनों को प्रणाम निवेदन करते हुए उभय के मध्य अग्नि प्रज्ज्वलित कर हवन करने लगे। अन्त में श्रीकृष्ण स्वयं उस पवित्र अग्नि के समीप गमन कर वहाँ उपवेशन करते हुए हवन करने लगे। तदनन्तर ब्रह्मा ने श्रीकृष्ण एवं श्रीराधिका को प्रणाम करके सात बार उन दोनों से होमाग्नि प्रदक्षिणा करवायी और पुनः श्रीराधिका को होमाग्नि प्रदक्षिणा कराते हुए उनको श्रीकृष्ण के निकट उपवेशन करवाया। तदुपरान्त श्रीकृष्ण को श्रीराधिका का हस्त धारण करने को कहा। श्रीकृष्ण के ऐसा करने के बाद ब्रह्मा ने वेदोक्त सप्त मंत्र पाठ करवाया। उसके पश्चात् महाप्रजापति ने श्रीराधिका का हस्त श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल पर एवं श्रीकृष्ण का एक हस्त श्रीराधिका के पृष्ठप्रदेश में स्थापित कर श्रीराधिका को मंत्रपाठ कराया। इसके बाद ब्रह्मा के निर्देशानुसार श्रीराधिका ने आजानुलम्बित पारिजात की माला श्रीकृष्ण के गले में अर्पित की। तदुपरांत श्रीकृष्ण ने भी श्रीराधिका को माल्यार्पण किया। उसके पश्चात् श्रीराधिका को श्रीकृष्ण के वाम पार्श्व में उपवेशन कर ब्रह्मा के निर्देशानुसार उन्होंने बद्धांजलि वेदोक्त पंचमंत्र का पाठ किया। इस प्रकार पिता जैसे कन्या को सम्प्रदान करते हैं वैसे ही पितामह ब्रह्मा ने भी श्रीराधिका को श्रीकृष्ण के हाथों में समर्पण करते हुए उन दोनों को प्रणाम निवेदन कर स्वस्थान ब्रह्मलोक में प्रस्थान किया। इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण की इच्छानुसार ब्रह्मा ने श्रीराधिका को कन्या रुप में प्राप्त करने का आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात् तपोरत ब्रह्मा की ध्यान-सम्बोधि अवस्था से क्षण के शून्यावस्था में "संध्या" का जन्म हुआ।

तदावधि ब्रह्मा अपने मानस पुत्रादि एवं मानस कन्याओं का इस विधि के अनुसार परिणय कार्य सुसम्पन्न करने लगे। परवर्तीकाल में ब्रह्मानंदन मनु ने "मनुसंहिता" में विवाह के इस प्रकार विधि-आचरण को सन्निवेशित किया। आदिकाल से यह प्रथा पृथ्वी मंडल में प्रायः सर्वजाति के मध्य प्रचलित होती चली आ रही है। कोई अग्नि को साक्षी मानते हैं, फिर कोई-कोई सूर्यदेव को साक्षी मानते हैं एवं ब्राह्मण द्वारा ही विवाह कार्यादि सम्पादन करने की रीति आज भी चली आ रही है।

–हिन्दी अनुवादः
मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख
(सहायक ग्रंथ – महाभारत)